# 1. १००८ श्री आदिनाथ जी

| वक्ष | चिन्ह | वर्ण | यक्षिणीं |
|---|---|---|---|
| गोवदव | बैल ( वृषभ ) | पीतवर्ण | चक्रेश्वरी |

## अर्घ

शुचि निरमल नीर गंध सु अक्षत, पुष्प चरू ले मन हरषाय।
दीप धूप फल अर्घ सु लेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय॥
श्री आदिनाथजी के चरणकमल पर बलि बलि जाऊँ मनवच काये।
हे करूणानिधि भवदुख मेटो, यातैं मैं पूजूं प्रभु पाय॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आषाड़ कृष्णा-२

गर्भकल्याणक

चैत्र कृष्णा-९

जन्मकल्याणक

चैत्र कृष्णा-९

तपकल्याणक

फाल्गुन कृष्णा-११

केवलज्ञान कल्याणक

पिता: श्री नाभिराम राजा
माता: मरू देवी

**मोक्ष स्थान कैलाश पर्वत**

माघ कृष्णा-१४

मोक्षकल्याणक